चारण शक्ति–काव्य का ऐतिहासिक महत्त्व

डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत
अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

आवड़ तूठी भाटियां, गीगाई गोड़ांह।
श्री बिरवड़ सिसोदियां, करणी राठौड़ांह।।

चारण महाशक्तियों से सम्बन्धित यह दोहा उपरोक्त राजपूत शासकों के इतिहास का साक्ष्य रहा है। समाज जिसको मानता हो, पूजता हो, संस्कृति उसे स्वीकार करती हो, उसका अवश्य कोई इतिहास रहा होगा, क्योंकि इतिहास जिसकी साख भरता है उसी को सामाजिक मान्यता मिलती है। चारण शक्ति–काव्य का भी अपना अनूठा स्थान रहा है। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से यह शक्ति–काव्य अपनी पृथक पहचान बनाए हुए है। आदि शक्ति हिंगलाज की कठिन यात्रा वर्णन से शुरू होने वाला यह काव्य कुछ विश्राम के पश्चात विक्रम की आठवीं–नौवीं सदी से पुनः अपनी यात्रा आवड़ देवी के ऐतिहासिक महत्त्व से प्रारम्भ करता है। इन रचनाओं में कई ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन बखूबी किया गया है।

आवड़ देवी ने बावन प्रवाड़े (चमत्कार) किए, इसलिए आपके बावन नाम, बावन मन्दिर और बावन ओरण (गोचर) हैं। इन प्रवाड़ों में कई ऐतिहासिक प्रवाड़े हैं। देवी ने सिन्ध के शासक ऊमरा–सूमरा पर क्रोध कर उसके राज्य का विध्वंश कर दिया था, इसका प्रमाण काव्य में मिलता है–

सात बहन साकार, निरवद्द नृशंसियो।
सन्तापी सूमरा रो, वंश विध्वंसियो।।

ऊमरा–सूमरा द्वारा आवड़ देवी को विवाह करने का प्रस्ताव दिया गया। उसको ठुकरा कर देवी ने उसके वंश का नाश किया, ऐसा वर्णन अनेक रचनाओं में मिलता है।

उस समय पंजाब के सम्माणा क्षेत्र के भाटी राजपूत शासकों पर प्रसन्न होकर देवी ने उन्हीं के वंशज जाम लखियार की आशा पूर्ण की और 'आशापुरा' के नाम से पूजित हुई। इस घटना का वर्णन भी अनेक रचनाओं में किया गया है। एक दृष्टांत यहाँ प्रस्तुत है–

शादी करण कीध नृप सठता, सो कुळ दियो नसाय।
सम्मा ने दियो राज सिन्ध रो, गिरजा गिरवर राय।।
विरद आसापूरण बाई, अरज म्हारी सांभळजो आई।

आवड़ देवी के सम्बन्ध में 'हाकड़ौ' समुद्र सोंखने अर्थात् एक चुल्लू भर में समुद्र हाकड़ा को पान करने का प्रवाड़ा भी ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। जैसलमेर जहां रेत का समुद्र तो है वहां कोई पानी (समुद्र) की कल्पना भी कैसे की जा सकती है। परन्तु यह बात सही है, क्योंकि भूगर्भशास्त्रियों और पुरातत्त्ववेताओं ने अपने शोध से यह बात सिद्ध कर दी कि इस मरुभूमि में कभी सरस्वती नदी थी। बीकानेर–जैसलमेर के इलाकों से होती यह पटियाला (पंजाब) के पास घग्घर नदी की धारा में मिलती थी। इन दोनों नदियों की सम्मिलित धारा को हक्रा (हाकड़ा) कहा जाता था। इस विशाल सरस्वती नदी का ऊपरी भाग शायद सूखने लगा था पर विक्रम की 9वीं सदी तक इसका निचला भाग बीकानेर, बहावलपुर और सिन्ध में पूरा पानी से भरा हुआ था, जहाँ पर बड़ी–बड़ी जहाजों से देश–विदेश में व्यापार होता था। भंवरसिंह सामौर ने अपनी पुस्तकों 'लोकपूज्य देवियां' और 'शक्ति काव्य' की भूमिका में इसका उल्लेख किया है। कर्नल टॉड ने भी हक्रा (हाकड़ा) के प्रवाह और उसके सूखने की पुष्टि की है। इस सम्बन्ध में शक्ति काव्य भी मिलता है, जिसके दो उदाहरण इस प्रकार हैं–

(1)
समद हाकड़ो पंथ न दीनो, दृढात ठाणी जी।
तीन चळू भर पीगा आवड़, जग सकळाई जाणी जी।।

(2)

हेक चळू में उदर हाकड़ो, उदधि लियो उतार।
छिति पर कीरत वा छाई....

जैसलमेर के भाटी शासकों में राव तणू और विजयराज जो विजयराज 'चूड़ाला' के नाम से विख्यात हुआ। यह आवड़देवी की कृपा का प्रसाद था। उसे अभय का वरदान मिला था। उदाहरण–

वर दीनो विजयराज नै मां, अमर चूड़ कर आप।
जीत्यो भाटी जंग जिता मां, परतख तेण प्रताप।।

तेमड़ा नाम के हूण राक्षस का वध कर आवड़ देवी तेमड़ाराय के नाम से विख्यात हुई। जैसलमेर के पास आज भी अवस्थित मन्दिर में देवी के हाथ से रखी गई अधर शिला उस घटना का मूक इतिहास है–

(1)

अधर सिला परचो प्रसिद्ध, छेहू बहन छिपाय।

(2)

मार्‌यो रे राकस तेमड़ो मय्या अधर सिला अटकाय रै....।

आवड़ देवी की आज्ञा और आशीर्वाद से राव तणू ने कोटनुमा मन्दिर बनवाया था। यह स्थान जैसलमेर से 114 किमी और पाकिस्तान की सीमा के पास है। भारत–पाक युद्ध के समय इस सीमा में गिरने वाले बम या गोले आज भी वहाँ पड़े हैं, जिनसे विस्फोट नहीं हुआ था। युद्ध में पकड़े गए पाकिस्तानी ब्रिगेडियर फिरोज खान ने देवी के चमत्कारों की बात को स्वीकार किया। आज भी तरणोट राय मन्दिर में सैनिक ही पूजा और आरती करते हैं। शक्ति काव्य में इसके अनेक साक्ष्य मिलते हैं–

तोप, बंब, गन गोळियां, आई बार अनेक।
इण मढ हद रै मांयनै, उड कर पड़ीय न हेक।।
अे म्हारी आवड़ अम्बा.... धोरां री धरती में थांरो ज थांन।

चारण कुल में अवतरित बिरवड़ी देवी का इतिहास जूनागढ़ के राव नवघण और चित्तौड़ के हम्मीर से मिलता है। नवघण की फौज (सेना) को कुलड़ी (मिट्टी का छोटा पात्र) भर दही और दो रोटी से भोजन करा कर आप अन्नपूर्णा के नाम से पूजित हुई। अल्लाउद्दीन खिलजी से हार कर मेवाड़ का राणा हम्मीर जब गुजरात की तरफ जाता है तो यहीं पर बिरवड़ी देवी से उनकी भेंट होती है। देवी का आशीर्वाद पाकर हम्मीर ने पुनः मेवाड़ पर अपना राज्य स्थापित किया। इसके साक्ष्य ये छंद हैं–

(1)

निवाय सिर, इक कही नवघण, मैया सुण मो बात;
बिरवड़ा जिमवाय बाई, भलौ आछौ भात।
तो मग जात जी मग जात, जल्दि जिमाड़ियौ मग जात;
कुल्हड़ी अणखूट कीधी, पुरसि लाखण पूत;
अन्नपूर्णा (पूरण) भई अम्बा, नवघणां दळ नूंत।

(2)

द्वारिका दिस जात देख्यौ, सुपह तजण सरीर,
दया करि चित्तौड़ दीनौ, भांगि सगळी भीर,
तो हम्मीर जी हम्मीर, हरख्यौ रांण चित हम्मीर।

देवल देवी मीसण का इतिहास पाबूजी राठौड़ के साथ जुड़ा है। मोडजी आसिया रचित 'पाबू प्रकास' में देवल देवी का पाबूजी के साथ संवाद वर्णन, फेरों में पाबूजी को वचन याद दिलाना और अन्त में अपनी सहायक शक्तियों सहित पाबूजी को आशीर्वाद रूप में सर्व सिद्धियां देना, वीर को अमरत्व

देने सम्बन्धी विस्तृत वृत्तान्त इसमें दिया गया है। पाबूजी के देवलोक गमन के पश्चात देवल का अपनी सहायक शक्तियों, योगिनियों के साथ संवाद–वर्णन अनूठा हुआ है। इसकी अन्तिम पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

वालै वत राखी बनै, लोवड़ियाळी लाज।
सरब करो मिल सगतियां, अमर कमध नै आज।।

देवी पाबूजी को कालमी घोड़ी पर असवार करके सिद्धियों सहित वरदान देती हैं–

चारअसी चारणी आज, तूठी तैं ऊपर,
सात बीस सांवळा करूं पावता सरजीव,
तोनूं केसर चाढ देवूं, रिद्ध सिद्ध दोनूं दत्त।

इसी प्रकार रामनाथ सटावट रचित 'पाबूजी रा सोरठा' में भी देवल देवी व पाबूजी राठौड़ का संवाद वर्णन भी पाबूजी राठौड़ सम्बन्धी इतिहास का साक्षी बनता ह। हम कह सकते हैं कि यदि राजस्थान के लोकप्रसिद्ध लोकदेवता का इतिहास साक्षी बनता है तो देवल देवी मीसण के प्रवाड़े भी हैं और इनका साहित्य भी उतना ही ऐतिहासिक महत्त्व रखता है।

जैसलमेर के रावल घड़सी, उमरकोट का 'वीसौ राणौ', उसके विरोधी 'दूढ़ा' के ऐतिहासिक प्रसंगों का वर्णन शक्ति–काव्य में हुआ है। लोकपूज्य चारण देवी करणी जी महाराज के ऐतिहासिक प्रसंगों पर तो पृथक से शोध किया जा सकता है। हुआ भी है और आगे भी शोध की संभावनाएँ हैं। वि. सं. 1444 में फलौदी का सुवाप गांव देवी करणी जी की जन्मस्थली रही। गांव 'साठिका' में आपका विवाह हुआ। देवी करणी जी ने पूगल के राव शेखा की सहायता की और आशीर्वाद देकर उसे अभय किया। जांगलू के राव कान्हा पर कुपित होकर उसका वध किया, रिड़मल की विनम्रता व शुद्ध आचरण के कारण उसे जांगलू का राज्य दिया जिसका वि. सं. 1475 दिया गया है। इन सभी घटनाओं का उल्लेख शक्ति काव्य में मिलता है।

(1)
दे करणी वरदांन, रिड़मल नै राजा कियौ।
महा पातकी मांन, कियौ नास नृप कान्ह रौ।।
(2)
पासी बीका पाट, करणा दे स्रीमुख कह्यौ।
थारौ रहसी ठाठ, म्हारा सूं बिरचै मती।।

वि. सं. 1476 में देशनोक की स्थापना की। वि. सं. 1515 में जोधपुर दुर्ग की नींव रखी। वि. सं. 1542 में बीकानेर नगर और किले की नींव मां करणी के कर–कमलों से रखी गई। अनेक लोक हितकारी कार्यों के पश्चात चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी, गुरुवार वि. सं. 1595 में 151 वर्षों की आयु प्राप्त कर लोक कल्याण की भावना से ही महाप्रयाण किया। यह वह स्थान था जहाँ बीकानेर और जैसलमेर राज्यों को लेकर सीमा–विवाद था। गडियाळा (कोलायत) और गैराछर के बीच 'धनेरू' तालाब था, वहाँ ज्योतिर्लीन होकर दो राज्यों के सीमा–विवाद को भगवती ने समाप्त किया।

चैत्र मास की शुक्ला चतुर्दशी वि. सं. 1595 में ही देशनोक में करणी की मूर्ति स्थापना हुई। इन सब तिथियों का, घटनाओं का वर्णन शक्ति–काव्य में प्रचुर मात्रा में मिलता है। देवी राठौड़ों की इष्टदेवी है। श्रद्धा और विश्वास ही धर्म की जड़ मजबत करता है। राव जैतसी और कामरान के युद्ध का वर्णन भी शक्ति काव्य में बखूबी हुआ है। रतनगढ़ के पास 'छोटड़िया' गांव में जहाँ भागते हुए कामरान का मुकुट गिरा था, वहाँ करणी जी का मन्दिर बनाया गया है। राव जैतसी द्वारा करणी माता से की गई प्रार्थना, रक्षा–पुकार और माता का रक्षार्थ पहुँचना ऐसा साक्षात्कार स्वयं जैतसी ही नहीं, कामरान को भी हुआ। इस ऐतिहासिक घटना का साक्षी भी शक्ति–भक्ति काव्य को बनाया जा सकता है। चारण शक्तियों में सबसे अधिक ऐतिहासिक कथानक करणी जी का मिलता है। आपके समकालीन राठौड़

शासकों के इतिहास के साथ देवी का इतिहास भी जुड़ा हुआ है। बीकानेर के महाराजा पृथ्वीराज राठौड़ की आराध्या भगवती राजल देवी की रचनाओं में जो वर्णन मिलता है उसे इतिहास की दृष्टि से परखा जा सकता है। यह शोध का विषय है। इसी प्रकार चारण शक्ति कामेही, गीगाय, माल्हण देवी, चन्दू देवी, सीलां देवी और इन्द्र बाईसा इत्याद के समय हुए शासकों, सामन्तों, जमींदारों, ठाकुरों के साथ अन्याय, अनाचार के विरुद्ध इन देवियों ने संघर्ष किया। उन घटनाओं का उनके नामों का उल्लेख स्थान सहित शक्ति–काव्य में किया गया है।

इस प्रकार शक्ति–काव्य में इन देवियों की जन्मस्थली, कर्मस्थली, तपोभूमि और लोक मान्यता में इनके मन्दिर, मढ़, देवरे सभी का अपना ऐतिहासिक महत्त्व है। इनके समय में हुए राजपूत शासकों अथवा इष्टधारियों, अनुयायियों का भी रोचक, सरस, ओजस्वी व प्रामाणिक वर्णन इन रचनाओं म अनेक रूपों में मिलता है।

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य में वही वर्णित होगा जो समाज में घटित हुआ है। कई बार इतिहास को सिद्ध करने के लिए साहित्यिक रचनाओं का सहारा लिया जाता रहा है। कई बार व्यक्ति और घटना का मेल नहीं बैठता है, किन्तु कुछ अंश तक वो प्रमाण हमें उस घटना के नजदीक जाने में मददगार सिद्ध होता है। इस दृष्टि से शक्ति–भक्ति काव्य का अपना ऐतिहासिक महत्त्व है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. करणी चरित्र, किशोर सिंह बार्हस्पत्य
2. लोकपूज्य देवियां, भंवरसिंह सामौर
3. माताजी रा छन्द, चन्द्र प्रकाश देवल
4. पाब् प्रकास, मोडजी आशिया
5. जैसलमेर री ख्यात, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी
6. करणी लीला सागर, सोहनदान सिंढायच
7. सोढायण, चिमनजी कविया (सं. डॉ. शक्तिदान कविया)
8. अक्षय भारत दर्शन, अक्षयसिंह रतनू
9. चारण साहित्य, अंक–2, सं. डॉ. शक्तिदान कविया, डॉ. सोहनदान चारण
10. शक्ति सुयश, सं. गुलाब बाई कवियांणी